

क्रियावृत्तिरादरार्था । किं च प्रेत्यै प्रगमनाय एत्यै आगमनाय च समञ्च संकुच  
प्रसारय च स्वेह्या संकोचविकासौ कुर्विति भावः । किं च सुपर्णाकारेण चित-  
त्वात्सुपर्णाचिदसि । तथा देवतया वाचा सहितः सन् अङ्गिरस्वत् अङ्गिरस-इव  
प्राणा-इव ध्रुवः स्थिरः सीद तिष्ठ ॥ ४५ ॥

श्रीमन्महोदधिरकृते वेददीपे मनोहरे । सप्तविंशोऽयमध्याय आग्निको विरतो  
ऽधुना ॥ २७ ॥ ॥

अथ काण्वशाखायां पाठविशेषः ॥

I. ॥ १-६ [सुहवीरु २०] ॥ १-६ ॥ ७ [विरालग्रे - शिवाभिरुच्य -] - १०  
॥ ७-१० ॥ ॥

II. ॥ ११-१४ [धृतेन । इलानो] - ११ [इला] - २० [सुवीरम् ।] - २२ ॥ ११-२२ ॥ ॥

III. ॥ २३. २४ ॥ २३. २४ ॥ २१ ॥ २५ ॥ २७ [वायऽङ्गुष्ठये] ॥ २६ ॥ ३२  
॥ २७ ॥ ३३ [वायऽङ्गु] ॥ २८ ॥ २१ [वायऽआगं] ॥ २१ ॥ ३० ॥ ३० ॥  
२८ ॥ ३१ ॥ ३४ [वायऽऋतस्पते] ॥ ३२ ॥ ॥

IV. ॥ हिरण्यगर्भः [१३. ४] । येन द्यौरुग्रा [३२. ६] ॥ ३३ ॥ यं क्रन्दसी [३२.  
७] ॥ ३४ ॥ २५ ॥ ३५ ॥ २६ । मा मा ह्रिषी [२७. १०२] । प्रजापते  
न [२३. ६५. - विद्या ज्ञातानि -] ॥ ३६ ॥ ॥

V. ॥ अग्नऽआयूषि [११. ३८.] ॥ ३७ ॥ अग्ने पवस्व [८. ३८ a] ॥ ३८ ॥ अ-  
ग्निर्ऋषिः [२६. १ a] ॥ ३९ ॥ ३५-४२ ॥ ४०-४७ ॥ ४४ ॥ ४८ ॥ ॥

VI. ॥ ४५ - रस्ते कल्पताम् ॥ ४१ ॥ ४५ प्रेत्याऽएत्यै - सीद ॥ ५० ॥ ॥

पलनुवाकेषु पञ्चाशत् ॥ ॥

इति काण्वीयायां वाजसनेयसंहितायामेकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥ ॥

I. होता यक्षत्समिधेन्द्रमिडस्पदे नाभा पृथिव्या अधि ।